भरमौर क्षेत्र के सुप्रसिद्ध 'पौणमाता' वादक श्री मुसाफिर राम भारद्वाज की लोक संगीत में भूमिका

भारती भागसैन
शोधार्थी संगीत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़।
Corresponding Author Email: bhagsainbharti@gmail.com

लोक संगीत जीवन की आत्मा है जो किसी भी प्रान्त की संस्कृति पर आधारित होता है। विभिन्न प्रान्तों में प्रादेशिक संस्कृति की आवश्यकता के अनुसार भिन्न–भिन्न अवसरों पर जो गीत गाए जाते हैं, उन्हें लोक संगीत कहते हैं। लोक संगीत एक गौरवपूर्ण पृष्ठभूमि है। इसकी सुविकसित अवस्था के कारण ही लोक संगीत अन्य विधाओं का विकास माना जाता है। भारत का संगीत इतना व्यापक है कि हर पहलू को बता पाना कठिन है क्योंकि हर क्षेत्र व उस क्षेत्र के भी उपक्षेत्र का अपना एक अलग संगीत है जिसका संगीत की दृष्टि से अलग महत्त्व है।

भारत देश में एक राज्य हिमाचल प्रदेश है जिसमें भिन्न–भिन्न तरह की लोक संस्कृति का समावेश है। विशाल हिमालय पर्वत के पश्चिम छोर में स्थित एक छोटा–सा पहाड़ी राज्य 'हिमाचल प्रदेश' है। हिमाचल में ऊंचे–ऊंचे पहाड़ जिन्हें देखकर ऐसा लगता है कि वे आसमान को छू रहें हो। तथा उन पहाड़ों पर सफेद बर्फ की चादर का अपना ही एक सौन्दर्य है। हिमालय की गोद में बसा हुआ यह छोटा–सा पहाड़ी राज्य अपने अनूठे प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए संसार भर में प्रसिद्ध है। हिमाचल प्रदेश प्राकृतिक सौन्दर्य, लोक संस्कृति, त्यौहारों तथा पौराणिक मन्दिरों के लिए भी प्रसिद्ध है। पर्यटन की दृष्टि से यह राज्य पूरे विश्व में सैलानियों के आकर्षण का प्रिय स्थल है। इस क्षेत्र में ऐसे–ऐसे रमणीक स्थल है जो सैलानियों को हर वर्ष अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उनमें एक स्थन चम्बा भी है जो अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ के हिमाच्छित उच्च शिखर और गहरी घाटियां मनोहारी प्राकृतिक दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है।

चम्बा अपने रमणीक मन्दिरों और हैंडीक्राफ्ट के लिए सर्वविख्यात है। चम्बा का 'चम्बा रूमाल' विश्व भर में प्रसिद्ध है। यह एक लोकप्रिय कशीदकारी हस्तकला है जिसे 'नीडल पेंटिंग' के नाम से भी जाना जाता है। चम्बा को 'मन्दिरों की नगरी' भी कहते हैं। मनोरम घाटियों में स्थित यह प्रदेश पर्यटकों के मनमस्तिष्क में स्वर्ग के अस्तित्व को साकार कर देता है। चम्बा जिले में एक जनजातीय क्षेत्र भरमौर है जो कि एक बहुत ही सुन्दर स्थान है।

भरमौर को 'शिव भूमि' भी कहते है। भरमौर के उत्तर से चम्बा की चुराह तथा पांगी तहसील, पश्चिम की ओर चम्बा, पूर्व दक्षिण क्षेत्र की ओर लाहौल स्पिति तथा कांगड़ा जनपद स्थित है। भरमौर पहले चम्बा की राजधानी हुआ करती थी जिसे ब्रह्मपुर कहते थे। भरमौर अपनी नैंसर्गिक सौन्दर्य और पुराने मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध हैं। भरमौर में जो लोग रहते हैं उन्हें 'गद्दी' कहते हैं तथा इन लोगों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा को 'गद्दियाली' कहते हैं।

भरमौर एक जनजातीय क्षेत्र है जो अपनी सांस्कृतिक धरोहर को पीढ़ी–दर–पीढ़ी संजोएं हुए विकास के पथ पर अग्रसर है। लोक संगीत की छाया यहाँ के जनजातीय जनजीवन में देखने को मिलती है। लोक संगीत अविा लोक संस्कृति के अन्तर्गत पारम्परिक लोक वाद्यों, लोक गीतों, लोक गाथाओं, लोक कथाओं, लोक नृत्यों तथा लोक नाट्यों का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान हैं, भरमौर के लोगों का रहन–सहन बड़ा ही साधारण है। यहाँ के लोक वाद्यों तथा गीतों की अलग विशेषता है जो यहाँ की संस्कृति को दर्शाती है। मनुष्य जब जन्म लेता है तो उसे वहाँ की मिट्टी से गहन लगाव रहता है, उसी तरह उसे वहाँ की लोक संस्कृति, भाषा तथा लोक संगीत से भी गहरा लगाव रहता है। लोक संगीत आम जन–जीवन के मनोरंजन का अत्यन्त रोचक विषय रहता है।

लोक संगीत का आम जन–मानस तक पहुंचाने तथा अपने कला को योग्य स्थान दिलाने में एक कलाकार अहम् भूमिका निभाता है क्योंकि बिना कलाकार के किसी भी कला के अस्तितव की कल्पना मात्र नहीं की जा सकती।

हिमाचल में कितने तेजस्वी कलाकार आज भी कला का सवर्धन तथा संरक्षण कर रहे हैं। उनमें से ही एक लोक कलाकार 'श्री मुसाफिर राम भारद्वाज' जी हैं, जिन्होंने अपनी लोक संस्कृति को अभी तक अपने प्रयासों द्वारा संजोए रखा है तथा उनके इसी योगदान द्वारा सन् 2014 में भारत सरकार द्वारा देश के चौथे सर्वोच्च सम्मान 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है।

श्री मुसाफिर राम भारद्वाज जी का जन्म एक जनजातीय क्षेत्र भरमौर के संचुई गांव में सन् 1930 में हुआ। इनके पिता का नाम स्व. श्री दीवाना राम तथा माता का नाम स्व. श्रीमती शांति देवी था। यह एक साधारण परिवार से सम्बन्ध रखते है। अक्षर और शब्द से अनजान मुसाफिर राम पेशे से किसान और साथ–साथ दर्जी का काम भी करते हैं। इनका विवाह श्रीमती सुकरो देवी जी से हुआ था जिससे इनके चार बेटे और दो बेटियाँ हुई। श्री मुसाफिर जी दुर्लभ संगीत वाद्य 'पौण माता' जो वाद्य वर्गीकरण के अवनद्ध वाद्य के अन्तर्गत आता है, का वादन करते है। पौण माता वाद्य का वादन केवल इन्हीं के परिवार के वंशजों द्वारा किया जाता है। श्री मुसाफिर जी उकैरा गौत्र से सम्बन्ध रखते है। इस गौत्र को ही शिव द्वारा पौण माता वाद्य बजाने का वरदान प्राप्त है। इन्होंने इस वाद्य के वादन की शिक्षा अपने पिता स्व. श्री दीवाना राम जी से 13 वर्ष की आयु से ली थी। इस वंश को शिव के चेले से भी पुकारते है। हर वर्ष जब भरमौर में मणिमहेश यात्रा आरम्भ होती है तो इनके परिवार के लोग पौणमाता वाद्य को लेकर इस यात्रा की अगुवाई मणिमहेश के डल झील तक अगुवाई करते है, जिसे छड़ी यात्रा कहते हैं। डल झील पहुँचने पर चेले झील को तैर कर पार करते है जिसे स्थानीय भाषा में 'डल भणना' कहते तथा उसके बाद यात्रा सही रूप से शुरू होती है।

श्री मुसाफिर राम जी जिस वाद्य का वादन करते है उसे पौण माता वाद्य कहते है तथा यह एक धार्मिक वाद्य है। पौण माता वाद्य एक पौराणिक वाद्य है जो लगभग 500 साल पुराना है। यह एक जैसे दो ही वाद्य यन्त्र हैं और दोनों वाद्य यन्त्र दो कन्यायें है। एक पौण माता वाद्य का स्मृति चिन्ह संचूई गांव में है तथा दूसरी स्मृति चिन्ह गरोला पंचायत के ककरी गांव में है। यह वाद्य तांबे और मेमने की खाल से बनाया गया है। इस स्मृति चिन्ह को बजाते समय ऊँ की ध्वनि आती है, ऐसा मानना है। रावी नदी के बाएं छोर पर बसे गांवों में किसी भी शुभ समारोहों में ग्रामीण द्वारा पौण माता वाद्य को न्यौता दिया जाता है और इनकी उपस्थिति जरूरी होती है। पौण माता स्मृति चिन्ह के वादन में यह वरदान प्राप्त है कि स्मृति चिन्ह पौण माता को केवल उकैरा गौत्र के वंशज ही बजा सकते है। अन्य यदि इस वाद्य को बजाने की कोशिश भी करते हैं तो इसमें ध्वनि उत्पन्न नहीं होती।

श्री मुसाफिर राम भारद्वाज ने पौण माता को विश्व प्रसिद्धि दिलाई है। मुसाफिर इस वंश के अभी सबसे बड़े मुखिया है। पौण माता के वादन के द्वारा ही इन्हें 2009 में 'संगीत नाटक अकादमी' द्वारा राष्ट्रपति आवार्ड से सम्मनित किया गया। सन् 2013 में 'लाइफ टाईम अचीवमेंट' पुरस्कार जो कि दिव्य हिमाचल एक्सीलेंट अवार्ड कमेटी द्वारा दिया गया और 26 अप्रैल 2014 को इन्हें देश के चौथे सम्मान 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया।

श्री मुसाफिर राम जी का लोक संगीत में योगदान अतुलनीय है। लगभग 80 वर्षों से लोक संगीत एवं पौराणिक वाद्य (पौण माता वाद्य) के प्रचार–प्रसार और इसके संरक्षण में आप मुख्य भूमिका निभा रहे है। स्वयं इन्होंने ही नहीं बल्कि आपके परिवार के सदस्य भी इस वाद्य कला को पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे संरक्षित कर रहे हैं। आपके बुजुर्गों के बाद आप दैविक कार्यों परम्पराओं तथा आस्थाओं को जीवित रखे हैं। धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में भी इस वाद्य को बजाते है। गरोला के ककरी पंचायत में किसी भी शुभ कार्य, उत्सव, धार्मिक अनुष्ठान, मेले, विवाह इत्यादि की शुरूआत इसी वाद्य के आगमन के बाद की जाती है। इसके इलावा यदि राज्य सरकार या भारत सरकार द्वारा इस वाद्य को न्यौता दिया जाए तो भी श्री मुसाफिर राम भारद्वाज और इनके परिवार के सदस्य पौण माता वाद्य को बजाने के लिए जाते है। सन् 2010 में दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमण्डल खेलों के दौरान भी पौण माता वाद्य से निकलने वाली धुन केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के 72 देशों में गूंज उठी थी। अपने प्रयासों के द्वारा ही इस दुर्लभ वाद्य यंत्र को आपने आज भी बचा कर रखा हुआ है। अतः प्रदेश के लोक वादन कला के बचाने और बढ़ाने में आपकी भूमिका अतुलनीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गद्दी : भरमौर की लोक संस्कृति एवं कलाकार,
2. आलौकिक हिमाचल प्रदेश, जगमोहन बलोसरा
3. अंधकार से प्रकाश की ओर, रूप शर्मा
4. गद्दी जनजाति, आनन्द कुमार
5. https://en.wikipedia.org>wiki